IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिमालयी परिवेश में जनपद पिथौरागढ़ के प्रमुख पर्यटन स्थलों का भौगोलिक अध्ययन

सुमित कुमार

भूगोल विभाग, एल0एस0एम0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड– 262502।

संक्षिप्तिका

सामान्यतः पर्यटन लोगों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण के लिये जाना कहलाता है। पर्यटन का प्राकृतिक, संस्कृति, धार्मिक आनंद व मनोरंजन के लिए सामाजिक विशेषता है। पिथौरागढ़,उत्तराखंड हिमालय कासीमांत जनपद है, जिसकी सीमाएं चीन और नेपाल से मिलती हैं। अपनी नैसर्गिक खूबसूरती के लिए यह जिला पर्यटकों के बीच काफी पसंद किया गया है। पिथौरागढ़ में पर्यटन के लिये तमाम प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर और अद्भुतजगह स्थित हैं, जिन्हें देखने लोग देश–विदेश से यहां पहुंचते हैं। अध्ययन क्षेत्र पर्यटन के लिए कई प्राकृतिक सुंदरता, साहसिक स्थानों तथा भौगोलिक आयामों आदि, जिनमें प्राचीन और पारंपरिक सांस्कृतिकदृश्य, प्रसिद्ध आध्यात्मिक स्थानों आदि से भरा हुआ है। प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु सर्वेक्षणात्मक, अवलोकनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधियों का प्रयोग किया गया था। प्रस्तुत शोधपत्र, पिथौरागढजनपद कें प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों काभौगोलिक अध्ययन व पर्यटन विकास की संभावनाओं पर आधारित है। हिमालयी जनपद होने सेपिथौरागढ में कई प्रकार के पर्यटन क्षेत्रों की उपलब्धता है परंतु पर्यटन स्थल संचार रहित, दुर्गम गन्तव्य व अविकसित होने के कारण प्रसिद्ध नहीं हो पाये हैं।

शब्द कुंजी–*पर्यटन, प्रसिद्ध स्थल, पिथौरागढ़जनपद, भौगोलिक अध्ययन एवंसम्भावनायें।*

1.0 साहित्य पुनरावलोकन

यूएन टूरिज्म के अनुसार *''पर्यटन एक सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक घटना है जिसमें व्यक्तिगत या व्यावसायिकध्व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए लोगों को उनके सामान्य वातावरण से बाहर के देशों या स्थानों पर जाना शामिल है। इन लोगों को आगंतुक कहा जाता है (जो या तो पर्यटक या भ्रमणकर्ता, निवासी या गैर–निवासी हो सकते हैं) और पर्यटन का संबंध उनकी गतिविधियों से होता है, जिनमें से कुछ में पर्यटन व्यय शामिल होता है।''* कुछ अन्य विद्वान पर्यटन को अपने सामान्य परिवेश से दूर व्यक्तियों की अस्थायी आवाजाही और नए गंतव्य में उनके प्रवास के दौरान की जाने वाली गतिविधियों के साथ–साथ पर्यटकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए की गई सुविधाओं के रूप में देखते हैं। कुछ विद्वानों ने पर्यटन स्थलों को एक परिभाषा के साथ पूर्ण अवधारणा के रूप में पेश किया है, जिसका अर्थ है कि गंतव्य वे स्थान हैं जिन्होंने पर्यटक उत्पादों और सेवाओं का एक मिश्रण बनाया है जिनकी खपत गंतव्य के ब्रांड नाम के तहत होती है। **Bigano *et al.*, 2004**ने अपने शोध में बताया है कि एक निश्चित गंतव्य जितना अधिक

पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करता है, उतना ही अधिक वह आकर्षक दिखाई देता है, और परिणामस्वरूप उसकी लोकप्रियता बढ़ती है। पर्यटक की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता में गंतव्य की विशेषताएं या दिए गए गंतव्य को बनाने वाले घटक शामिल होते हैं।**Vengesayi *et al.*, 2009**के अनुसारकिसी पर्यटन स्थल के आकर्षण पर पर्यटकों के आकर्षण, गंतव्य सहायता सेवाओं और लोगों से संबंधित कारकों के प्रभाव की जांच करता है।पर्यटन उद्योग एक विविध सेवाओं और उद्योगों का समग्र समूह है। हालाँकि अधिकांश अवकाश–आधारित पर्यटन नया है, धार्मिक और आध्यात्मिक पर्यटन उत्तराखण्ड में सदियों से अस्तित्व में है **(Sharma and Nayak, 2017)**। धार्मिक पर्यटन, पर्यटन उद्योग का एक प्रमुख अंग होने के कारण धार्मिक विरासत भारत जैसे समृद्ध, बहु–सांस्कृतिक और समृद्ध देश का अभिन्न अंग है **(Gambhir *et al.*, 2021)**।

2.0 परिचय

पिथौरागढ़ में मुख्य रूप से अधिकारिक भाषा के तौर पर हिंदी भाषा ही बोली जाती है। परन्तु कई लोग इंग्लिश और कई जनजातियाँ कुमाउनी भाषा का भी प्रयोग करती है।पिथौरागढ़ में दोप्रकार की (भोटिया व राजी) जनजातियाँ निवास है। इन जनजातियों की संस्कृति पारंपरिक व विकसित समाज से भिन्न पायी जाती है जो वर्तमान में भी जीवित है। पिथौरागढ़ में महा–शिवरात्रि, बसंत पंचमी, दशहरा, दिवाली और कार्तिक पूर्णिमा का त्यौहार व पारंपरिक मेलों के रुप में कंडाली, हिलजात्रा, चौतोल, नन्दादेवी एवं छिपला केदार यात्रा भी हर्षोउल्लास के साथ मनाया जाता है। पिथौरागढ़ लोक गीतों और नृत्यों के लिए भी बहुत प्रसिद्ध है।

सामान्य शब्दों में कहा जाये तो ज्ञान एवं आनंद के लिये किसी व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा किया गया भ्रमण ही पर्यटन है, जिसे मुख्यतः तीन प्रकार से विभाजित किया जाता है–

(क) **पर्यटन**– ज्ञान तथा आनंद के लिये घर से बाहर जाना। इस अर्थ में पारायटन मूलतः पर्यटन है।

(ख) **देशाटन**–मुख्य रूप से आर्थिक लाभ के लिये देश के बाहर जाना।

(ग) **तीर्थाटन**– धार्मिक महत्व के स्थानों की यात्रा करना।

डब्ल्यूटीओ पर्यटन स्थलों को कई विश्व ब्लॉकों में विभाजित करता है अमेरिका, यूरोप, प्रशांत, पूर्वी एशिया, मध्य पूर्व, अफ्रीका और दक्षिण एशिया। हालाँकि, अमेरिकी क्षेत्र को उत्तरी अमेरिका और दक्षिण अमेरिका में अलग करना संभव है क्योंकि दोनों ब्लॉकों में बहुत अलग लेकिन अलग पारिस्थितिक, सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक अभिविन्यास है। पर्यटन की प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण तत्व हैं–मनुष्य, स्थानऔर समय अर्थात् इन तीनों तत्वों में से एक के भी अभाव में पर्यटन की संकल्पना साकार नहीं हो सकती। पर्यटन की प्रक्रिया सभी प्रकार के पर्यावरण पर महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक प्रभाव डालती है। जहाँ पर्यटन की नियोजित प्रक्रिया पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव डालती है, वहीं अनियोजित पर्यटन पर्यावरण, समाज एवं संस्कृति के सुधार एवं विकास में सहायक है। अतः सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास पर्यटन के महत्वपूर्ण घटक हैं।

2.0 विधि तंत्र एवं उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु, सर्वेक्षणात्मक, अवलोकनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक ऑकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक ऑकड़ों का संग्रह शोधार्थी द्वारा स्वंय क्षेत्र के भ्रमण के दौरान लोगों के साक्षात्कार से व फोटोग्राफी के माध्यम से किया गया। द्वितीय ऑकड़ों को प्राप्त करने के लिये जनपद पिथौरागढ़ के पर्यटन कार्यालय, सम्बन्धित विभिन्न पत्रिकाओं, पुस्तकों व शोध पत्रों की सहायता ली गयी है। पर्यटन स्थानों की स्थिति मानचित्र को जी0पी0एस0, गूगल अर्थ, क्वानटम जी0आई0एस0 इत्यादि की

सहायता से तैयार किया गया तथा एम0एस0 ऑफिस एवं पेंट का प्रयोग शोध कार्य को लिखने व व्यवस्थित करने हेतु किया गया है।

डब्ल्यूटीओ ने कई प्रकार के पर्यटन की पहचान की है, जैसे तटीय और समुद्र तटों के साथ–साथ पानी से संबंधित अन्य मनोरंजन, वन्य जीवन, पर्वतारोहण, शहर पर्यटन और प्रकृति पर्यटन। शोध का उद्देश्य जनपद पिथौरागढ़ के सबसे अधिक लोकप्रिय पर्यटन स्थलों और उन सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक विशेषताओं पर अध्ययन करना है जो लोगों को उन पर्यटन स्थलों पर ही जाने के लिए आकर्षित करते हैं,जो कि पर्यटन की दृष्टि से काफी धनी है। जब कोई क्षेंत्र पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होता है तो उससे उस क्षेत्र को अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। किसी पर्यटन स्थल पर पर्यटक के आने से वहाँ के स्थानीय निवासियों को अनेक रूपों में रोजगार प्राप्त होता है राष्ट्रीय स्तर पर वह क्षेत्र अपनी पहचान स्थापित कर लेता है इससे उस क्षेत्र के समग्र विकास में सहायता मिलती है। मेरीपरियोजना द्वारा सीमांत जनपद के मुख्य पर्यटन स्थलों को परिचित कराया गया है।

3.0 अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र देश में हिमालयी राज्य उत्तराखण्ड का सीमांत जनपद पिथौरागढ़है, जिसके पूर्व में काली नदी नेपाल की सीमा से अलग कर देती है। जनपद पिथौरागढ़ का संपूर्ण भाग पर्वतीय है जिसके उत्तर में ढकी हिमालय की पर्वत श्रेणियों द्वारा तिब्बत की सीमा से अलग कर देती है। जनपद का विस्तार 29.4^{0}उत्तरी अक्षांश से 30.3^{0}उत्तरी अक्षांश तक तथा 80^{0}पूर्वी देशांतर से 81^0 पूर्वी देशांतर तक है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 7218 वर्ग किमी0 है। पिथौरागढ़का तापमान ग्रीष्म काल में लगभग 35^0 से0तक तथा शीतकाल में तापमान लगभग 20^0 से0 कम रहता है। प्रशासनिक दृष्टि से सीमान्त जनपद है, जनपद पिथौरागढ़ में 6 तहसील, 8 विकासखण्ड तथा 64 न्याय पंचायत हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 4,83,439 है जनपद का जनसंख्या घनत्व 68 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है। पिथौरागढ़ में लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 1021 महिलायें है तथासाक्षरता दर 82. 25% है।पिथौरागढ़ की प्रमुख नदियाँ ***सरयु, राम गंगा, गोरी, काली***बडी नदियाँ है। जो कि बर्फिली पहाड़ियों के अलग–2 भागों से निकल कर उत्तर पूर्व की औंर बहती है। इसके अतिरिक्त छोटी नदियॉ ***पनार, सपना, लोहावती, बोरियागाड़, लोहिया, कोरमा, रतियागाड़, चर्मामाड*** आदि विद्मान है। कुमाऊं क्षेत्र का तीसरा सबसे बड़ा शहर पिथौरागढ़, मिलम ग्लेशियर और दारमा घाटी के ट्रेक के लिए शुरुआती बिंदु के रूप में लोकप्रिय है।क्षेत्र की वनस्पतियों और जीवों में समृद्ध पारिस्थितिक विविधता है। चंद साम्राज्य के उत्कर्ष काल में पिथौरागढ़ में कई मंदिर और किलों का निर्माण हुआ था जो वर्तमान में पर्यटक स्थल है। पिथौरागढ़ जिले की संपूर्ण उत्तरी और पूर्वी सीमाएं अंतरराष्ट्रीय हैं, यह भारत के उत्तर सीमा पर एक राजनीतिक रूप से संवेदनशील जिला है। तिब्बत से सटे अंतिम जिला होने के कारण, लिपुलख, कुंगिरीबिंगरी, लंपिया धुरा, लॉई धूरा और बेल्चा पास तिब्बत के लिए खुले रूप में काफी महत्वपूर्ण सामरिक महत्व रखते हैं।

4.0 जनपद पिथौरागढ में पर्यटन की वर्तमान स्थिति

पिथौरागढ़ जिला भारत के उत्तराखंड राज्य का सबसे पूर्वी हिमालयी जिला है। यह प्राकृतिक रूप से उच्च हिमालयी पहाड़ों, बर्फ से ढकी चोटियों, दर्रों, घाटियों, अल्पाइन घास के मैदानों, जंगलों, झरनों, बारहमासी नदियों, ग्लेशियरों और झरनों से घिरा हुआ है। पिथौरागढ़ की सुन्दरता के कारण ही पर्यटकों में यह ***''मिनी कश्मीर''*** के नाम से जाना जाता है। पिथौरागढ़ उत्तराखंड का बेहद ही खूबसूरत शहर है। यह कुमाऊं क्षेत्र का चौथा सबसे बड़ा शहर है। यहां चंडाक, थल केदार, गंगोलीहाट, पाताल भुवनेश्वर, बेरीनाग, डीडीहाट, मुनस्यारी, धारचूला और जौलजीबी जैसे कई दर्शनीय स्थल हैं। गंगोलीहाट अपने काली मंदिर के लिए विश्वप्रसिद्ध है। चौकोरी, बेरीनाग में स्थित का एक चाय

बागान क्षेत्र के लिये प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है। मुनस्यारी, पिथौरागढ़ का एक प्रसिद्ध हिल स्टेशन है जिसे जोहार घाटी यात्रा के आधार शिविर के रूप में भी जाना जाता है। तालिका–1 एवं आकृति–1 के आधार पर वर्तमान समय में उत्तराखण्ड का सीमांत जिला पिथौरागढ पर्यटन की दृष्टि से पिछड़ रहा है, जिसमें कोविड–19 का प्रभाव भी देखा जा सकता है।

Shakeela et al., 2022 वैश्विक पर्यटन उद्योग कोविड–19 महामारी से तबाह हो गया है। दक्षिण एशिया में, यह प्रभाव बहुत गहरा है, महामारी ने पूरे क्षेत्र में लगभग 47.7 मिलियन यात्रा और पर्यटन नौकरियों को प्रभावित किया है। इनमें से कई नौकरियां अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं और कमजोर समुदायों के पास थीं। जबकि 2019 में पर्यटन दक्षिण एशिया में सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक था, महामारी के परिणामस्वरूप क्षेत्रीय सकल घरेलू उत्पाद को पचास बिलियन डॉलर से अधिक का नुकसान हुआ। विशेष रूप से, मालदीव, भूटान, श्रीलंका और नेपाल में 2020 में पर्यटकों के आगमन में 70 से 80 प्रतिशत की कमी देखी गई। इसके अलावा, संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन ने 2023 में जल्द से जल्द पूर्व–कोविड आगमन स्तर पर वापसी का अनुमान लगाया है। यह इस महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्र के लिए एक लंबी रिकवरी का संकेत दे रहा है।

तालिका–1: जनपद पिथौरागढ में 2000–2022 तक देशी व विदेशी पर्यटकों के आगमनका वार्षिक ऑकड़े*(Source: Tourism Department Pithoragarh)*।

क्र0 सं0	वर्ष	पर्यटक		क्र0 सं0	वर्ष	पर्यटक		क्र0 सं0	वर्ष	पर्यटक	
		देशी	विदेशी			देशी	विदेशी			देशी	विदेशी
1	2000	63929	504	9	2008	164225	653	17	2016	195123	574
2	2001	70805	474	10	2009	183484	926	18	2017	193226	470
3	2002	135412	914	11	2010	198102	735	19	2018	232300	580
4	2003	137618	704	12	2011	207580	1194	20	2019	153729	656
5	2004	153635	971	13	2012	195123	554	21	2020	19567	699
6	2005	160311	989	14	2013	153689	562	22	2021	26869	87
7	2006	165561	671	15	2014	77186	399	23	2022	53433	73
8	2007	162478	1004	16	2015	77675	235	कुल		3181060	14628

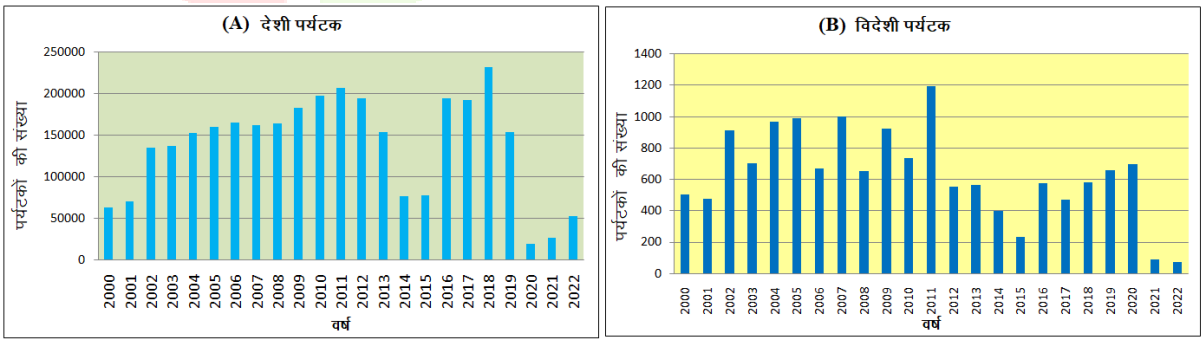

आकृति–1: जनपद पिथौरागढ़ में 2000–2022 तक पर्यटकों का आगमनः (A)देशी व (B)विदेशी पर्यटकों।

5.0 जनपद पिथौरागढ़ के प्रमुख पर्यटन स्थल

पिथौरागढ़ जनपद, भारत देश के राज्य उत्तराखंड के एक बेहद ही खूबसूरत आकर्षण से भरा क्षेत्र है। पिथौरागढ़ शहर का नाम पहले सोर घाटी (सरोवर घाटी) हुआ करता था। पिथौरागढ़ को आज के समय में लॉन्ग लिटिल कश्मीर के नाम से भी जानते है। जनपद में सुंदर–सुंदर धार्मिक, सांस्कृतिक पर्यटक स्थलों की उपस्थिति हैं, जो पिथौरागढ़ की शान बढ़ाएं रखते है। पिथौरागढ़ में कई प्रसिद्ध धार्मिक मंदिर, पर्यटन स्थल, ट्रैकिंग मार्ग,जल–स्थल–नभ

साहसिक खेल और कई प्राकृतिक व कृतिम झीलें हैं, जो इस क्षेत्र में आने वाले पर्यटकों के लियेमनोरंजन का द्वार खोलते है। जनपद पिथौरागढ़ के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों को छायाचित्र–1, छायाचित्र–2 एवं मानचित्र–1 के द्वारा प्रस्तुत किया गया है जिनका विस्तार पूर्वक अध्ययन निम्न प्रस्तुत है–

छायाचित्र–1: जनपद पिथौरागढ के पर्यटन स्थलः(A) मिलम,(B) लंदनफौर्ट, (C) खलियाटॉप, (D) बिर्थी जलप्रपात, (E) मोस्ट–मानू मन्दिर, (F) कालामुनि मन्दिर,(G) पाताल भुवनेश्वर एवं(H) नारायण आश्रम।

छायाचित्र–2: जनपद पिथौरागढ के पर्यटन स्थलः(A) चौकोरी, (B) पिथौरागढ़, (C) ट्यूलिप गार्डन मुन्स्यारी,(D) जैलजीबी, (E) पंचाचूली जीरो प्वाइंट एवं(F) झूलाघाट।

1. ***चण्डाक–***पिथौरागढ़ के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में से चांडक एक छोटी सी ट्रेकिंग के लिए जानी जाने वाली पहाड़ी है। जिला मुख्यालय से 7 किमी0 उत्तर दिशा की ओर चण्डाक पर्वत (चोटी) पर स्थित है। यहाँ पर सालों के सुन्दर वृक्ष अपनी एक विशिष्ट प्राकृतिक धरोहर को प्रदर्शित करते है। यहाँ से सम्म्पूर्ण पिथौरागढ़ नगर का विंहगमय दृश्य दिखाई देता है। चण्डाक से 500 मीटर दूरी पर मोस्टमाणू मंदिर स्थित है जो कि असीम शांति और आस्था का प्रतीक है। इस मंदिर में हर साल अगस्त और सितम्बर के महीने में बहुत ही शानदार मेले का आयोजन किया जाता है। चण्डाक एक पिकनिक स्पाट के रूप में अभर रहा है। लोग छुट्टी के दिन मनोरंजन, शांति और आन्नद की प्राप्ति हेतु यहा भारी मात्रा में देखे जाते है।

2. ***थलकेदार–***थलकेदार पिथौरागढ़ मुख्यालय से 25 किमी0 की दूरी पर भगवान शिव का बहुत बड़ा मंदिर है। थलकेदार (सोर घाटी) पिथौरागढ़ की सबसे ऊची चोटी है, इसकी ऊंचाई 2480 मी0 है।थल केदार मंदिर भगवान शंकर को समर्पित मंदिर है जो पिथौरागढ़ के लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में शामिल हैं। पिथौरागढ़ नगर के दक्षिण में स्थित पर्वतमाला के शिखर पर रात्रि के समय हल्की रोशनी दिखाई देती है। थलकेदार में प्रत्येक वर्ष भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की गणेश चतुर्थी को भव्य मेला लगता है।

3. ***जौलजीबी***–पिथौरागढ़ मुख्यालय से लगभग 66 कि0मी0 दूर जौलजीबी काली व गोरी नदी के सगंम पर स्थित है। यह स्थल एक ऐतिहासिक, पौराणिक, सांस्कृतिक एवं व्यापारिक मेले के रूप में विश्व प्रसिद्ध है। यह मेला प्रति वर्ष 14 नवम्बर को शुरू होता है और 10 दिन तक चलता है।ऐसी मान्यता है कि जौलजीबी में आज से शताब्दी वर्ष पूर्व पाल राजाओं का शासन था तथा जौलजीबी व्यापार की दृष्टी से प्रसिद्व व्यापारिक केन्द्र था। वर्ष भर पर्यटक संगम स्थल को देखने एवं नवम्बर माह में मेले का लुप्त उठाने को भारी संख्या में आते है।

4. ***पाताल भुवनेश्वर***–पिथौरागढ़ के जिला मुख्यालय से 91 किमी0 की दूरी पर गंगोलीहाट तहसील भूवनेश्वर ग्राम के स्टेशन से कुछ दूरी नीचे उतरने पर प्राचीन भुवनेश्वर के भव्य मंदिर के दर्शन होते है। इस मंदिर के अंदर प्रवेश करने के लिए बहुत ही संकीर्ण रास्तों से होकर गुजरना पड़ता है। स्कंद पुराण में भी इस मंदिर की महिमा का वर्णन है। यह एक रहस्यमय गुफा मंदिर (कार्स्ट स्थलाकृति) है, पाताल भुवनेश्वर की गुफा कब और कैसे बनी इसका ठीक पता अभी तक नहीं चल पाया तैंतीस करोड़ देवी देवताओं का निवास इस गुफा में है, ऐसा स्थानीय लोगों का मानना है।पर्यटकों के लिए यह गुफा घूमने के लिए एक मुख्य स्थल हुआ करता है।

5. ***बेरीनाग***–यह पिथौरागढ़ शहरसे 102 किमी0 की दूरी पर स्थित है। 1720 मीटर ऊँचाई पर स्थित यह नगर चाय के बागानों के लिये प्रसिद्व है।यहाँ से हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों के भव्य दर्शन होते है। उत्तराखण्ड के अनेक नगरों से सड़क मार्ग द्वारा यह जुड़ा है।

6. ***चौकोड़ी***–बेरीनाग से 11 किमी0 पहले स्थित चौकोडी में चाय के अनेक बड़े–बड़े बागान स्थित है जो कि पिथौरागढ़ जनपद का तेजी से उभरता हुआ पर्यटन स्थल है। चौकोड़ी की यात्रा किए बिना पिथौरागढ़ जनपद का पर्यटनीय भ्रमण अपूर्ण है। चौकोड़ी में बॉलीवुड ही नहीं बल्की हॉलीवुड की फिल्मों की सूटिंग भी हो चुकी है। यहाँ के प्राकृतिक दृश्य फिल्मकारों को कॉफी भाते है।

7. ***कैलाश मान सरोवर यात्रा***–हिन्दु पुराणों में कैलाश क्षेत्र को पृथ्वी का केन्द्र माना जाता था। तीर्थ स्थल कैलाश मानसरोवर की यात्रा का प्रारंभ पिथौरागढ़ के रास्ते होते हुए ताकलाकोट से चीन में कैलाश मान सरोवर के दर्शन किये जाते है। वैसे तो यह यात्रा प्राचीन समय से चली आ रही है। परंतु इसकी विधिवत शुरूआत वर्ष 1981 से प्रारंभ हुई। पहली बार दिल्ली से तीन दलों में 59 यात्रियों को दिल्ली से रवाना किया गया। इस यात्रा में कैलाश मानसरोवर में 54 किमी0 की परिक्रिया 14 हजार फीट ऊचाई में पूर्ण होती है।सम्पूर्ण यात्रा पथ 150 किमी0 पैदल मार्ग का यह पूरा सफर 47 दिन से पूरा होता था। वर्तमान समय में कैलाश मानसरोवर यात्रा पथ को सुविधापूर्ण व कम समय में पूर्ण किये जाने के भारत–चीन के संयुक्त प्रयास जारी है।

8. ***मुनस्यारी***–मुनस्यारी के उल्लेख के अभाव में पिथौरागढ़ जनपद के पर्यटन स्थलों का विवेचन पूर्णतः प्राप्त नहीं किया जा सकता। मुनस्यारी पिथौरागढ़ जिला मुख्यालय से 135 किमी0 की दूरी पर स्थित है। कालामुनि के घने जंगल तथा बिर्थीफाल मुनस्यारी मार्ग के दर्शनीय स्थल है। मुनस्यारी मुख्य रूप से साहसिक, प्राकृतिक और इको–पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित हो रहा है। मुनस्यारी को धरती का स्वर्ग कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। इसके सामने पंचाचूली पर्वत की चोटियों के कारण बहुत रमणीय दृश्य दिखाई पड़ता है। मुन्स्यारी अपने में धार्मिक परिवेश के साथ–साथ ऐतिहासिक महत्त्व को भी समेटे हुए है।

9. ***मिलम***–यह स्थान मुनस्यारी से उत्तर दिशा की ओर 75 किमी0दूरी पर स्थित है,जो तीनों ओर से घिरा मैदानी भू–भाग है। मिलम ऊंचे पहाड़ी दर्रों (उंटा धुरा, जंदी धुरा और किंगरीबिंगरी धुरा) से होते हुए तिब्बत में ज्ञानिमा मंडी तक जाने वाले मार्ग पर है। 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद से सीमा बंद है, और मिलम अब बहुत कम निवासियों वाला एक भूतिया गाँव है। युद्ध से पहले, यह 500 परिवारों से भरा एक व्यापार केंद्र हुआ करता था। फिलहाल तिब्बत के साथ

सभी तरह का व्यापार बंद है और परिवार मुनस्यारी और निचले इलाकों में अन्य स्थानों पर बस गए हैं। गर्मियों के महीनों में बहुत कम लोग वहां जाते हैं और औषधीय पौधों, उच्च ऊंचाई वाले अनाज और जम्भू की खेती करते हैं। तिब्बती व्यापारी इस स्थान पर आते थे और बोरेक्स, कीमती पत्थरों, पश्मीना और नमक का व्यापार करते थे।

10. ***अस्कोट***—जिला मुख्यालय से 41 किमी0 की दूरी पर स्थित यह एक ऐतिहासिक गॉव है। यहॉ साढे चार सौ वर्ष पुराना ऐतिहासिक राजमहल स्थित है। 16वीं0 शताब्दी में निर्मित यह राजमहल ***"देवल दरवार"*** के नाम से प्रसिद्व है। राजमहल तत्कालीन वास्तुकला का बेजोड नमूना है। जुलाई सन् 1986 में सृजित अस्कोट कस्तुरा मृग अभ्यारण्यके कारण यहॉ पर प्रतिवर्ष बड़ी तादात में पर्यटकों का जमावड़ा लगा रहता है।पिथौरागढ़ आने वाले जो भी पर्यटक वन्य जीव और वनस्पति विज्ञान में रूचि रखते है उनके लिए सबसे अच्छी जगह अस्कोट सैंक्चुअरी है। अस्कोट अभ्यारण पिथौरागढ़ से लगभग 54 किमी0 की दूरी पर स्थित है। पिथौरागढ़ के इस शानदार परिवेश में चीयर, तीतर, कोकला, भील, हिमालयी काला भालू, चौकोर, हिम तेंदुए और कस्तूरी मृग आदि जानवर देखने को मिलते है। जानवरों के अलावा अस्कोट में कई आकर्षक मंदिर भी है जिनकी यात्रा पर्यटक यहाँ कर सकते है। यह पिथौरागढ़ के सबसे मशहूर जगहों में से एक है। अगर आपको हिरण देखने का शौक है तो आपको अस्कोट सेंचुरी जरूर जाना चाहिए। यहां आपको कस्तूरी मृग हिरण देखने को मिलेंगे। इस सेंचुरी को विशेष तौर पर कस्तूरी मृग और उसके आवास के संरक्षण लिए बनाया गया था।

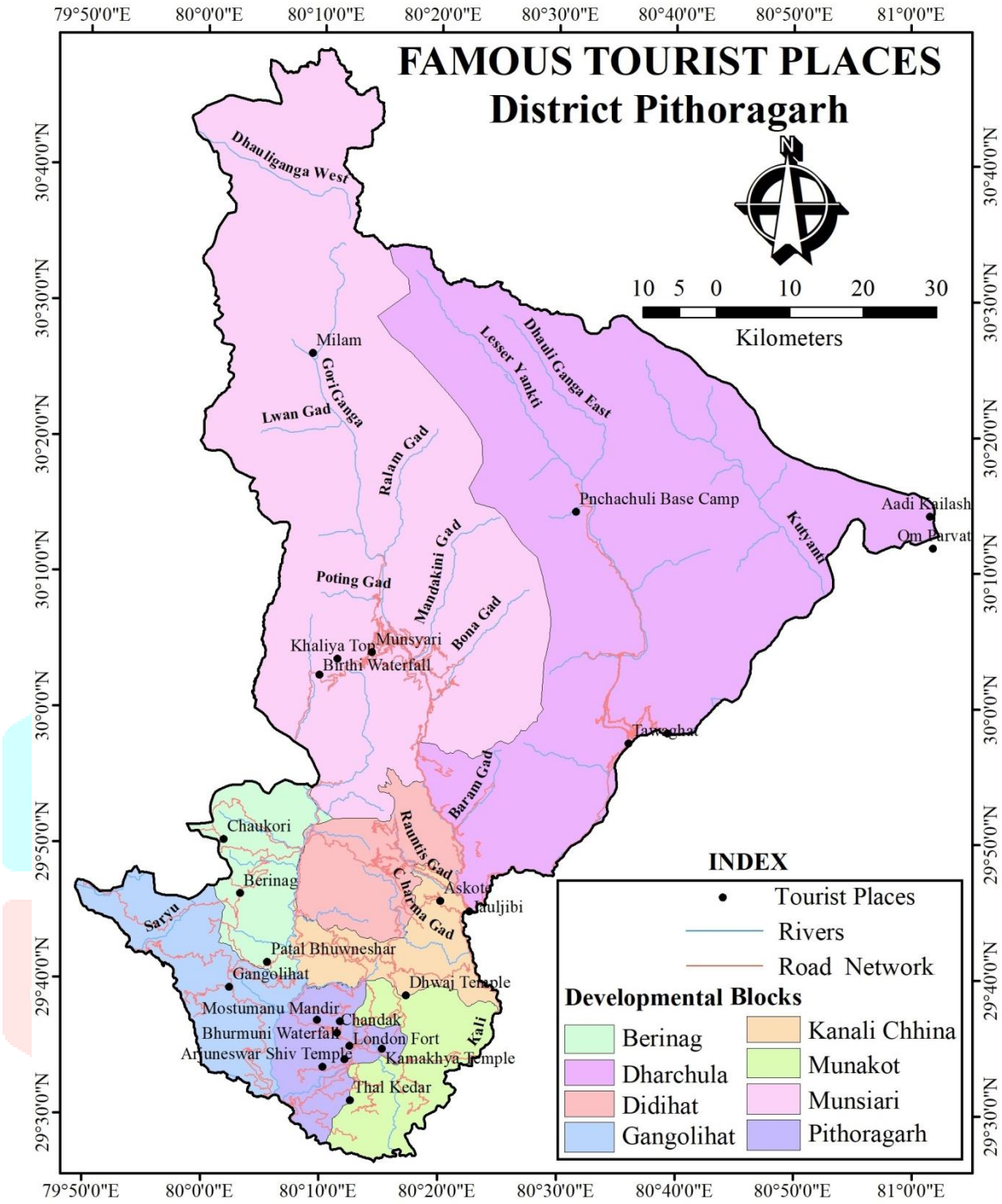

मानचित्र–1: जनपद पिथौरागढ़ के प्रमुख पर्यटन स्थल *(स्रोतः फील्ड सर्वेक्षण, जीपीएस एवं जीईई)*।

11. तवाघाट–तवाघाट धारचूला तहसील से लगभग 25 किमी0 की दूरी पर स्थित है। कैलाश मानसरोवर जाने वाले पर्यटक और श्रद्वालु तवाघाट तक बसों, कारो, तथा टेक्सियों से जाते है, उसके बाद पैदल जाना होता है। पिथौरागढ़ में आने वाले प्रकृति प्रेमी पर्यटकों के लिए तवाघाट का भ्रमण एक असीम आनंद प्रदान करने वाला स्थान है।

12. लिथलाकोट–पिथौरागढ़ की चौंदास पट्टी के बसे हुए स्थानों में लिथलाकोट सर्वाधिक ऊचाई पर स्थित है। चौंदास क्षेत्र के ईष्ट देव ***'संयसै'*** इसी लिथलाकोट की चोटी पर पूजे जाते है। भोटिया(शौका) जनजाति के लोगों का मानना है कि उनके पूर्वजों का निवास स्थान यहीं था। लिथलाकोट चोटी के चारों ओर नीचे ढलानों पर चौंदास के सारे गॉव बसे हुए है। यहॉ के रंग–बिरंगे पुष्प मखमली घास और बांज तथा देवदार के वृक्ष इतने सुन्दर हैं कि राष्ट्रीय–अंतराष्ट्रीय पर्यटक लिथलाकोट की प्राकृतिक सुन्दरता को देखने प्रतिवर्ष यहां आते हैं।

13. लन्दन फोर्ट–पिथौरागढ़ किला, पिथौरागढ़ के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में से एक सबसे प्राचीन किला है, जिसे सन 1789 में गोरखाओं द्वारा बनवाया गया था। इसलिए इस किले का नाम गोरखा किला रखा गया। पिथौरागढ़ किला सोर घाटी

के बाहरी इलाके में सबसे ऊपर चोटी पर स्थित है। इस किले में पर्यटक ट्रेकिंग का आनंद लेने के साथ–साथ लम्बी पैदल यात्रा का भी अनुभव अपने साथ वापस लेकर जाते है। बाउलीकीगढ़ नामक इस किले का निर्माण 1791में गोरखा शासकों ने किया था। नगर के ऊंचे स्थान पर 6.5 नाली क्षेत्रफल वाली भूमि में निर्मित इस किले के चारों ओर अभेद्य दीवार का निर्माण किया गया था। इस दीवार में लंबी बंदूक चलाने के लिए 152 छिद्र बनाए गए हैं। यह छिद्र इस तरह से बनाए गए हैं कि बाहर से किले के भीतर किसी भी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाया जा सकता। किले के मचानों में सैनिकों के बैठकर व लेटकर हथियार चलाने के लिए विशेष रूप से स्थान बने हैं। किले की लंबाई 88.5 मीटर और चौड़ाई 40 मीटर है। 8.9 फीट ऊंचाई वाली इस दीवार की चौड़ाई 5 फीट 4 इंच है। पत्थरों से निर्मित इस किले में गारे का प्रयोग किया गया है। किले में प्रवेश के लिए दो दरवाजे हैं। बताया जाता है कि इस किले में एक गोपनीय दरवाजा भी था, लेकिन अब यह कहीं नजर नहीं आता। किले के अंदर लगभग 15 कमरे हैं, किले का मुख्य भवन दो मंजिला है। भवन के मुख्य भाग में बने एक कमरे की बनावट नेपाल में बनने वाले भवनों से मेल खाती है।

14. गंगोलीहाट–गंगोलीहाट पिथौरागढ़ शहर से लगभग 82 किमी0 की दूरी पर स्थित है। यह शहर कई मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है जिनमे से काली माता के शक्तिपीठ का मंदिर सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है। सरयू और राम गंगा नदी से घिरा यह शहर गहरी गुफाओं के लिए भी जाना जाता है। हिमालय पर्वत की चोटियों की सुन्दरता इस शहर की खूबसूरती में चार चाँद लगा देती है। हाट कालिका, अंबिका देवी, चामुंडा मंदिर औरवैश्नवी मदिंर यहां के प्रसिद्ध मंदिर हैं।यहां की सबसे मशहूर गुफा पाताल भुवनेश्वर और मुक्तेश्वर गुफा को देखने के लिए हजारों की संख्या में पर्यटक आते हैं।

15. ध्वज मंदिर–डीडीहाट मार्ग पर पिथौरागढ़ से 18 किमी0 की दूरी पर टोटानौला नाम स्थल है। इस स्थल से 3 किमी0 लम्बी कठिन चढ़ाई चढ़ने पर यह प्रसिद्ध मन्दिर स्थित है।यह मंदिर समुद्री तल 2100 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और शक्तिशाली हिमालय पर्वतमाला की बर्फ से ढंकी चोटियों का मनमोहक दृश्य प्रस्तुत करती है। यह मंदिर हिंदू भगवान शिव को समर्पित है और साथ ही साथ यह मंदिर देवी जयंती माता को समर्पित है जो स्थानीय लोगों द्वारा पूजी जाती हैं। मुख्य मंदिर से 200 फुट नीचे भगवान शिव का एक गुफा मंदिर स्थित है। ध्वज मंदिर पिथौरागढ़ की पौराणिक कथाओं से जुड़ा हुआ है। ऐसा माना जाता है की भगवान शिव ने यहाँ कई वर्षों तक निवास किया था और भगवान शंकर के निवास स्थान होने के कारण इस मंदिर का नाम ध्वज मंदिर रखा गया। भगवान शिव की गुफा के साथ इस मंदिर में मां जयंती की पूजा भी यहाँ के स्थानीय लोगों द्वारा की जाती है।

16. कपिलेश्वर महादेव मंदिर गुफा–पिथौरागढ़ के प्रमुख पर्यटक स्थलों में भगवान भोलेनाथ का कपिलेश्वर गुफा मंदिर बहुत लोकप्रिय है। कपिलेश्वर गुफा मंदिर पिथौरागढ़ से लगभग 3 किमी0 की दूरी पर स्थित है। कपिलेश्वर महादेव मंदिर पिथौरागढ़ के ऐंचोली ग्राम के ऊपर एक रमणीक पहाड़ी पर स्थित है। 10 मीटर गहरी गुफा में स्थित यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है। एक पौराणिक कहावत के अनुसार, इस स्थान पर भगवान विष्णु के अवतार महर्षि कपिल मुनि ने तपस्या की थी इसीलिए इसे ***"कपिलेश्वर"*** के नाम से जाना गया। इस गुफा के भीतर एक चट्टान पर शिव, सूर्य व शिवलिंग की आकृतियाँ मौजूद हैं। यह मंदिर शहर से केवल 3 किमी0 दूर है तथा यह मंदिर हिमालय पर्वतमाला का लुभावना दृश्य प्रस्तुत करता है।

17. नारायण आश्रम–पिथौरागढ़ के कुमाऊं क्षेत्र में एक बहुत अच्छा आश्रम है जहां पर श्रधालुओं के रुकने की व्यवस्था है। यह आश्रम शांति से भरा हुआ है और इसके चारों तरफ सुंगंधित फूलों की खुशबू से सुशोभित है। आश्रम में एक पुस्तकालय और एक ध्यानकेंद्र कक्ष है। यह प्रकृति से प्यार करने वालों के लिए मां की गोद के समान अनुभव कराने वाला स्थान है।

18. अर्जुनेश्वर मंदिर–अर्जुनेश्वर मंदिर पिथौरागढ़ से करीब 10 किमी0 की दूरी पर स्थित है। इस अर्जुनेश्वर मंदिर की स्थापना महाभारत के अर्जुन द्वारा किया गया था। इस मंदिर में भगवान शिव की प्रतिमा स्थापित है। यह मंदिर समुद्र तल से 6000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यह अर्जुनेश्वर मंदिर पहाड़ी के पास स्थित होने की वजह से काफी सुंदर एवं आकर्षक दिखता है, यही कारण है कि यहां पर पर्यटकों की अच्छी खासी–भीड़ भी देखी जाती है।

19. कामाख्या मंदिर– उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले से 7 किमी0 दूर कुसौली गांव में मां कामाख्या देवी का मंदिर स्थित है। यह स्थान सुंदर चोटियों से घिरा हुआ है, जिसके कारण कुसौली में स्थित मां कामाख्या देवी के इस मंदिर की ख्याति दूर–दूर तक फैली है। यह केंद्र आध्यात्मिक शांति के साथ–साथ श्रद्धालुओं को प्रकृति से भी जोड़ता है। मदन मोहन शर्मा ने 1972 में देवी की 6 सिरों वाली मूर्ति को जयपुर से यहां लाकर कामाख्या मंदिर में इसकी स्थापना की थी। अद्भुत सौंदर्य से भरपूर देवी की मूर्ति के दर्शन दूर से ही किए जा सकते हैं। मंदिर में मकर संक्रांति, जन्माष्टमी, शिवरात्रि को विशेष पूजा–अर्चना की जाती है। इस मंदिर की विशेषता है कि यह उत्तराखंड में कामाख्या देवी का एकमात्र मंदिर है, मंदिर में नवरात्रि पर 10 दिनों तक अखंड ज्योति जलाने के साथ–साथ विशेष पूजा की जाती है और साथ ही भजन–कीर्तन का आयोजन किया जाता है।

20. मोस्टमानु मंदिर–मोस्टा देवता का मंदिर उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले से 7किमी0 की दूरी चंडाक में स्तिथ है, मोस्टा देवता को सोर घाटी क्षेत्र में वर्षा के देवता के रूप में पूजा जाता है। हर साल भादव के महीने ऋषि पंचमी के दिन 3 दिन का मोस्टामानू मंदिर परिसर में एक मेले का आयोजन किया जाता है, मान्यता है कि मोस्टा देवता वर्षा के देवता है।

21. भुरमुनी जलप्रपात–भुरमुनी जलप्रपात ने पिथौरागढ़ की सुन्दरता पर चार चाँद लगा दिए हैं। पहाड़ों में घने जंगलों के बीच झरने के रूप में गिरता हुआ पानी बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता है। झरने तक पहुँचने के लिए मुख्य सड़क से लगभग 5 किमी0 घने जंगलों के बीच आपको कच्चे रास्ते से गुजरना होता है। इस कच्चे रास्ते पर लगभग 4 किमी0 तक आप अपने वाहन से जा सकते हैं किन्तु 1 किमी0 आपको पैदल ही जाना होगा जो थोडा सा जंगली जानवरों की दृष्टि से खतरनाक है।

22. बिर्थी जलप्रपात–उत्तराखंड राज्य का सबसे बड़ा जलप्रपात है। ऐसी ही अद्भुत जगहों में से एक है बिर्थी फॉल, जो उत्तराखंड में सबसे चर्चित वॉटरफॉल है। इसकी ऊंचाई 140 मीटर है, यह झरना समुद्र तल से 400 फीट ऊपर उठता है और कालामुनि दर्रे से भी पहुंचा जा सकता है। बिरथी जलप्रपात मुनस्यारी से लगभग 35 किमी0 दूर है और एक छोटी सी पखडंडी द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। बिर्थी फॉल पिथौरागढ़ का फेमस टूरिस्ट प्लेस है, जो पिथौरागढ़ मुख्यालय से 90 किमी0 दूर मुनस्यारी जाने वाले रास्ते में पड़ता है। झरने के आसपास का क्षेत्र घने जंगल से घिरा हुआ है। मुनस्यारी जाने वाले पर्यटक इस झरने का दीदार करने यहां जरूर रुकते हैं और यही वजह भी रही कि आज इस वॉटरफॉल को पूरे देश में पसंद किया जाने लगा है।इसकी ऊंचाई बिर्थी वॉटरफॉल को सबसे अलग बनाती है बरसात के दिनों इस झरने की बूंदें काफी दूर सड़क तक लोगों को भिगा देती हैं। बरसात में 140 मीटर ऊपर से पानी को गिरते देखना वाकई अद्भुत नजारा होता है। बिर्थी फॉल को फेमस टूरिस्ट प्लेस बनाने के लिए यहां तमाम प्रयास भी किए जा रहे हैं। यहां पर्यटकों की सुविधा के लिए KMVN का गेस्ट हाउस भी है।

23. खालिया टॉप–खलिया टॉप समुद्र तल से 3500 मीटर की आश्चर्यजनक ऊंचाई पर स्थित है और उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में मुनस्यारी के पास करीब 12 किमी0 दूर स्थित है। यह ट्रैक पार करना बेहद मुश्किल माना जाता है, घने जंगलों से होकर इस ट्रैक का मार्ग जाता है, इस ट्रैक में ट्रैकरों को कई तरह के जानवर और पक्षी मिलते हैं। हर किसी ट्रैकर्स का सपना होता है कि वो एक बार खलिया टॉप ट्रैक को जरूर पार करे। खलिया टॉप बर्फीली चोटियों से

घिरा एक घुमावदार घास का मैदान है, जो कुमाऊं की रहस्यमय भूमि का विस्मयकारी दृश्य प्रस्तुत करता है। खलिया टॉप से राजसी पंचाचूली, राजरंभा, हरदेओल और नंदा कोट चोटियों के मनोरम दृश्यों का आनंद लिया जा सकता है। दुनियाभर से ट्रैकर्स यहां आते हैं, देश के कोने–कोने के ट्रैकर्स भी गर्मियों में इस ट्रैक को पार करने के लिए जाते हैं। दरअसल, यह बर्फ से ढकी अल्पाइन घास का मैदान है. जिस कारण यह जगह ट्रैकर्स की पसंदीदा जगह है, गर्मियों में बड़ी तादाद में ट्रैकर्स यहां जाते हैं।

24. **पंचाचूली बेस–**पंचाचूली बेस कैंप उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में स्थित है। यह ट्रेक दर गांव से शुरू होता है, जो धारचूला से 42 किमी0 आगे पड़ता है। धारचूला ट्रैकिंग बेस से निकटतम शहर है। धारचूला से दार तक टैक्सियाँ उपलब्ध हैं जो तवाघाट और सोबला की आदिवासी बस्तियों से होकर जाती हैं। 3,470 मीटर (लगभग) की ऊंचाई पर पिथौरागढ़ में स्थित, दारमा घाटी प्रकृति प्रेमियों और रोजमर्रा की जिंदगी की कोलाहल से बचने की चाह रखने वालों के लिए आदर्श पलायन स्थल है। कैंप ट्रेक के रास्ते में बर्फ से ढके पहाड़ों, अल्पाइन घास के मैदानों और प्राचीन नदियों के सुरम्य दृश्य दिखाई देते हैं। दारमा घाटी के माध्यम से यह एक आसान से मध्यम ट्रेक है। पंचाचूली बेस कैंप दांतू बुग्याल के करीब है और गांवों में जनजातीय जीवन का करीबी अनुभव कराता है।

6.0 पर्यटन में चुनौतियॉ एवं निष्कर्ष

पर्यटन के दृष्टिकोण से जनपद पिथौरागढ उत्तराखण्ड का एक बहुमुखी पर्यटन स्थल है। हिमालय की गोद में बसा यह जिला अपने पावन, धार्मिक एवं शांत वातावरण के कारण प्रमुख पर्यटक केन्द्र के रूप में विकसित हाने की क्षमता रखता है। कुमाऊॅनी व्यंजन और यहां की संस्कृति को राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाए जाने की आवश्यकता है। जनपद पिथौरागढ में पर्यटन संबंधी कई समस्यायें काफी गंभीर है जिसका प्रभाव पूर्ण व आंशिक रूप से पर्यटकों के आगमन में स्पष्ट परिलक्षित होता है। नैसर्गिक सौंदर्यता के कारण पर्यटन की अपार संभावनाएं है परंतु यातायात की समस्या सर्वाधिक ज्वलंत है। पिथौरागढजिले के पर्यटन विकास हेतु पर्यटन विभाग की देखरेख में एक विस्तृत कार्ययोजना बनाई जाने और कुछ क्षेत्र आपदा ग्रस्त होने के कारण ध्वस्त हो गये हैं जिन्हें पुनः जीवित करना अत्यंत आवश्यक है। लोगों में पर्यटन के महत्व व स्थानीय सम्भावनाओं पर समय–समय पर स्थानीय आधार पर कार्यशालाओं के आयोजन की आवश्यकता है।पर्यावरण–अनुकूल पर्यटन को बढ़ावा हेतु होम स्टे, इको–टूरिज्म, बायो टूरिज्म और स्थानीय सामग्री आधारित बुनियादी ढांचे के विकास की अवधारणा पर निर्माण। **Rai *et al.*, 1998** के अनुसार जहां पर्यटक हों, वहां होम स्टे को बढ़ावा देकर ग्रामीण पर्यटन उत्थान कार्यक्रम को बढ़ावा देना ग्रामीण परिवेश, संस्कृति, स्थानीय लोगों के रहन–सहन और खान–पान से परिचित कराया जाने से पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।

कोविड–19 महामारी ने विभिन्न तरीकों से जीवन पर गंभीर प्रभाव डाला है, लेकिन भारत के हिमालयी क्षेत्र सहित दुनिया भर में लगाए गए लॉकडाउन के कारण हमारे पर्यावरण पर सकारात्मक परिणाम देखने को मिला है। दुनिया भर में कोविड–19 के प्रसार ने वाहनों, उद्योगों और सभी पर्यटन गतिविधियों की आवाजाही को कम कर दिया है। सभी व्यावसायिक गतिविधियों और यातायात के बंद होने से पर्यावरण को प्राकृतिक रूप से पुनः प्राप्त करने में मदद मिली है। हिमालय वैश्विक जलवायु परिवर्तन के प्रति दुनिया के सबसे नाजुक और संवेदनशील हॉटस्पॉट में से एक है, जिसके प्रभाव विशेष रूप से तीव्र गति से प्रकट होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Bigano, A., Hamilton, J.M. and Tol, R.S.J. (2004): Climate Change and Tourism in the Mediterranean. https://www.researchgate.net/publication/24130111

Gambhir, D., Khalid, A.M., and Sharma, S. (2021): Religious tourism and sustainable development: perspectives from hill states in India. In a. Lubowiecki-vikuk, B.M.B., De Sousa, B.M. Dercan, and W. Leal filho (eds.), Handbook of Sustainable Development and Leisure Services, Springer International Publishing, pp. 273–287. https://doi.org/10.1007/978-3-030-59820-4_18

https://pithoragarh.nic.in/document-category/tourism_newsletter/

https://pithoragarh.nic.in/tourist-places-2/

https://uttarakhandtourism.gov.in/destination/pithoragarh

https://www.unwto.org/glossary-tourism-terms

Rai, S.C., Lepcha, R. and Sharma, E. (1998). Ecotourism: a strategy for conservation and development in research for mountain development: some initiatives and accomplishments. G.B Pant Institute of Himalayan Environment and Development (GBPIHED), Gyanodaya Prakashan, Nainital, p. 196.

Shakeela, A., Samarathunga, M., Pant, S.R. and Rinzin, D. (2022): COVID-19 and tourism in the Himalayan and Indian Ocean countries of South Asia. South Asia Center, Atlantic Council. https://www.atlanticcouncil.org/blogs/southasiasource/covid-19-and-tourism/ (Access on 09 Fabruary, 2024)

Sharma, P. and Nayak, J.K. (2017): Residents‟ perception of religious tourism and its impacts: a case of Uttarakhand, India. In Dr. Mukesh K. Barua Dr. Usha Lenka Dr. Kaushik V. Pandya Dr. Paresha N. Sinha (eds.), Proceedings of International Conference on *'Research and Business Sustainability'*ICRBS 2017, Section-1, Chapter-25, pp. 138-143.

Vengesayi, S., Mavondo, F.T. and Reisinger, Y. (2009): Tourism Destination Attractiveness: Attractions, Facilities, and People as Predictors. Tourism Analysis, Vol. 14, pp. 621–636.